[redacted] 8/7/21

B.A. Part I
Hindi Hons (1)
Paper - I
मध्यकालीन हिन्दी काव्य
नवनीत दानव

डॉ० [illegible] कुमार
[illegible] प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
[illegible] कॉलेज,
इलाहाबाद

सूरदास के प्रस्तुत पद का अर्थ स्पष्ट करें, व्याख्या करें, या इसकी विशेषताओं का उल्लेख करें।

मन मैं नाच्यौ बहुत गुपाल।

काम-क्रोध को पहिरि चोलना, कंठ विषय की माला।
महामोह के नूपुर बाजत, निंदा शब्द रसाल।
भ्रम-भोरी भ्रम भयो पखावज, चलत असंगत चाल।
तृष्णा नाद करति घट भीतर, नाना विधि दै ताल।
माया को कटि फेंटा बाँध्यौ, लोक प्रतिष्ठा दिये थाल।
कोटिक कला काछि दिखराई, जात न बरनि सो हाल।
सूरदास की सबै अविद्या दूरि करौ नँदलाल।।

प्रसंग - प्रस्तुत पद में सूर ने मानव-मानव के चक्कर में पड़े हुए जीव को [illegible] किया है। सूरदास की गोपाल परमात्मा से प्रार्थना करती है।

व्याख्या — सूरदास गोपाल कृष्ण से कहते हैं कि हे गोपाल! संसार के आवागमन के चक्र में जन्म में नाचते-नाचते थक चुका हूँ। मेरा उद्धार कीजिये। भौतिकवादी संसार में काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि के चक्कर में मैं फंस रहा हूँ। रूपकात्मक अलंकार के माध्यम से कहते हैं कि मैं नाचने के क्रम में काम-क्रोध का पोशाक पहने हुए हूँ तथा मेरे कंठ में विषयों की माला है। मेरे पैरों में महामोह की पाजेब है जिसके पर निंदा के समान शब्द निकल रहे हैं। मेरा चंचल मन मृदंग का कार्य कर रहा है तथा यह कुसंगति के साथ पर चला रहा है। आनन्द ही आनन्द कामना की भावना कई तरह बलवती होकर आवाज दे रही है। नाचने के क्रम में मेरे कमर में माया का फेंटा है तथा ललाट पर लोभ का तिलक है। मैंने कई योनियों में जन्म तथा मृत्यु में जन्म

क्रमशः —